



मार्च के मुख्य कृषि कार्य

राजीव कुमार सिंह*, कपिला शेखावत*, प्रवीण कुमार उपाध्याय*, एस.एस. राठौर* और संदीप कुमार सिंह**

इस माह कृषि कार्यों की दृष्टि से रबी फसलें पकने की अवस्था में आने लगती हैं। समय पर बोई गयी राई-सरसों की कटाई इस माह के प्रथम पखवाड़े में होनी शुरू हो जाती है। इसी प्रकार गेहूं, जौ, मसूर, चना, मटर, राई-सरसों, अलसी, गन्ना, आलू की फसलें भी तैयार हो जाती हैं। गेहूं में दाने का पूर्ण भराव और दाना सख्त होने लगता है। बरसीम से बीज उत्पादन करना है, तो भी इस माह में विशेष सावधानियां रखनी पड़ेंगी। इससे अधिकतम उत्पादकता के साथ-साथ, उच्च गुणवत्ता वाला बीज भी प्राप्त हो सकेगा। इस माह में बसंतकालीन फसलों की बुआई की तैयारी शुरू हो जाती है। बसंतकालीन मक्का, गन्ने के साथ ही ग्रीष्मकालीन दलहनी फसलों की बुआई के लिए यह उपयुक्त समय होता है। इस माह में हरे चारे की कमी बहुतायत में देखी जाती है, इसलिए खाली हुए खेतों में ग्रीष्मकालीन चारे की फसलें जैसे-मक्का, बाजरा और ज्वार की बुआई कर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। सब्जी, फलदार पेड़ों और पुष्प व सुगंध वाले पौधों से भरपूर पैदावार लेने के लिए सस्य कृषि क्रियाओं की आवश्यकता होती है। इस लेख में इन सभी बातों पर विस्तृत जानकारी दी गई है।

फागुन माह एक खास महत्व रखता है, क्योंकि इसमें होली का त्यौहार आता है। खेती के दृष्टिकोण से भी यह मौसम महत्वपूर्ण है। इस माह रबी की फसलें पककर तैयार हो जाती हैं। किसान भाई इन्हें बेचकर अपनी तमाम जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विज्ञान मेले के आयोजन के लिए भी मौसम अच्छा है। इस

*सस्य विज्ञान संभाग, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012; **कृषि विज्ञान केन्द्र, सांडस कला, बुरहानपुर-450221 (मध्य प्रदेश)

समय ठंड कम होने लगती है और किसानों के पास कृषि मेला घूमने के लिए पर्याप्त समय होता है। मेले के कार्यक्रमों में उन्नत प्रजातियों एवं गुणवत्तायुक्त बीजों के बारे में वैज्ञानिकों से उनके बारे में चर्चा कर सकते हैं।

गेहूं

- गेहूं की फसल में सिंचाई योजना बनाते समय मृदा की किस्म, फसल, फसल प्रजाति, वृद्धि काल, मृदा में जीवांश पदार्थ की मात्रा और खेत में विगत वर्ष बोई गयी फसल आदि का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। जब भूमि

में प्राप्य जल की कमी हो जाए और पौधों की वृद्धि एवं विकास दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका हो, उस अवस्था में आवश्यकतानुसार सिंचाई कर देनी चाहिए। गेहूं की फसल में सिंचाई मृदा में 50 प्रतिशत उपलब्ध जल रहने पर करनी चाहिए।

- सामान्यतः बौने गेहूं की अधिकतम उपज प्राप्त करने हेतु हल्की एवं दोमट या भारी दोमट मृदा में जल की उपलब्धता के आधार पर सिंचाइयां करनी चाहिए, अन्यथा इन अवस्थाओं में जल की

कमी का उत्पादन एवं उसकी गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ेगा। सदैव हल्की मृदा में 6 सें.मी. एवं दोमट या भारी दोमट मृदा में 8 सें.मी. गहरी सिंचाई करनी चाहिए।

- प्रोपीकोनाजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) 500 मिली या हैक्साकोनाजोल 1.0 लीटर प्रति हैक्टर या मैन्कोजेब 75 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गेहूं का पर्ण या भूरा रतुआ रोग: रोग के नियंत्रण के लिए धब्बे दिखाई



गेहूं का पर्ण या भूरा रतुआ रोग

पूसा कृषि मेला

दिनांक 2-4 मार्च 2023 को भाकृअनुप- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में पूसा कृषि विज्ञान मेला का आयोजन किया जा रहा है। यह एक समसामयिक महत्व वाले विषय पर केंद्रित होता है। इस वर्ष का विषय 'खाद्य पोषण एवं पर्यावरण सुरक्षा' रखा गया है। मुख्य प्रदर्शनी तथा मेले में चलने वाले तकनीकी सत्र इसी से संबंधित होंगे। इसमें तकनीकी सत्रों के दौरान अनेक समसामयिक विषयों जैसे मोटे अनाज आधारित मूल्यवर्द्धित खाद्य श्रृंखला विकास, कृषि एवं वन स्वास्थ्य, जलवायु, तन्यक खाद्य प्रणालियां, पुनरुद्धारक कृषि, सहकारी संस्थाएं, कृषि विपणन एवं निर्यात, किसान उत्पादक संगठन-स्टार्ट अप लिंकेज, किसान नवाचार, डिजिटल एवं स्मार्ट खेती, वर्टिकल खेती, हाइड्रोपोनिक्स, संरक्षित एवं सटीक खेती विधियां, ड्रोन के अनुप्रयोग, किसान उत्पादक संगठन, निर्यात प्रोत्साहन, जैविक एवं प्राकृतिक खेती की विधियां आदि से संबंधित चर्चाएं भी होंगी। इस सत्रों में वैज्ञानिकों के अलावा कृषि मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, एपीडा, नाबार्ड, कृषक अधिकार प्राधिकरण आदि के अधिकारी और नीति निर्माता भी मौजूद रहेंगे।

करनाल बंट रोग के लक्षण एवं रोकथाम



करनाल बंट को गेहूं का कैंसर भी कहा जाता है। इसका प्रकोप अपेक्षाकृत ठंडे प्रदेशों जैसे-पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड के मैदानी इलाके तथा उत्तरी राजस्थान में अधिक होता है। इस रोग का कारक एक कवक *टिलेसिया इंडिका* है। यह रोगजनक मृदा में रहता है तथा संक्रमित बीज इस रोग को नये क्षेत्रों में फैलाते हैं। इस रोग से दानों के अन्दर काला चूर्ण बन जाता है तथा अंकुरण क्षमता कम हो जाती है। करनाल बंट रोग के नियंत्रण के लिए खेत में कम से कम पांच वर्षों तक फसलचक्र अपनायें, रोगग्रसित बालियों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। साफ व स्वस्थ बीजों का चयन किया जाये एवं उन्नत प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करें। बीटावैक्स, औरियोफेन्जिन, थीरम, जीनेव, ऑक्सीकार्बोक्सिन 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें। रासायनिक कीटनाशकों जैसे प्रोपीकोनाजोल (0.1 प्रतिशत), ट्राइएडिमेफोन (0.2 प्रतिशत), कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत), मैन्कोजेब (0.25 प्रतिशत), पुष्प निकलने की अवस्था में छिड़काव करें।

देने पर 0.1 प्रतिशत प्रोपीकोनाजोल 25 ई.सी. (टिल्ट) का एक या दो बार पत्तियों पर छिड़काव करें।

- पर्णीय या अंगमारी झुलसा रोग: रोग

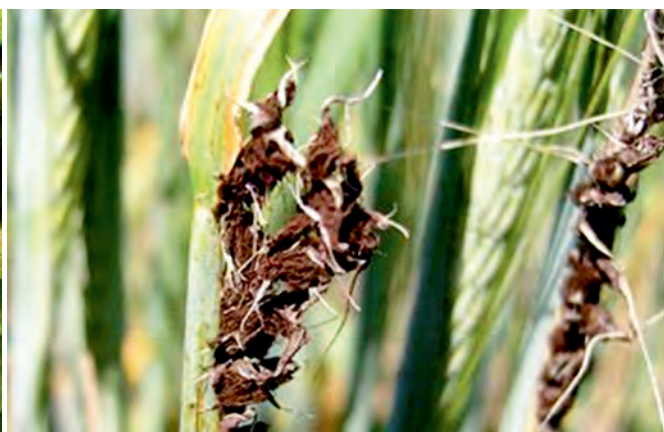
के लक्षणों में सर्वप्रथम निचली पत्तियों पर छोटे-छोटे, अण्डाकार, भूरे रंग के और अनियमित रूप से बिखरे हुए धब्बे आपस में मिलकर पत्ती का अधिकांश



गेहूं की नई प्रजाति एच.डी.-3386



गेहूं का पीला या धारीदार रतुआ रोग



गेहूं की फसल में कण्डवा रोग

भाग ढक देते हैं। रोग के नियंत्रण हेतु थिरम एवं डाइथेन जैड-78 का 0.25 प्रतिशत का छिड़काव करने से इस रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

- **चूर्णिल आसिता रोग:** प्रभावित पौधे की पत्तियों पर भूरे सफेद रंग के चूर्ण के ढेर दिखायी देते हैं। रोग की उग्र अवस्था में पर्णच्छंद, तना और तुषनिपत्र आदि भी भूरे-सफेद चूर्ण से ढक जाते हैं। रोगग्रस्त पौधों द्वारा दाने छोटे और सिकुड़े हुए उत्पन्न होते हैं। रोग के नियंत्रण हेतु सल्फर का बुरकाव 20 कि.ग्रा./हेक्टर करना चाहिए।
- काला सिट्टा रोग में दानों का सिरा गहरा भूरा या काला हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए फूल आने से लेकर फसल पकने तक 800 ग्राम डायथेन जेड 78 (जीनेव) या डायथेन एम. 47 (मैकोजेब) 250 लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिनों के अन्तर पर छिड़काव करें।
- **कंडवा रोग के लक्षण एवं रोकथाम:** इस रोग के नियंत्रण के लिए रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जला दें। बीटावैक्स 2.5 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 2.5-3.0 ग्राम/कि.ग्रा. या कार्बोक्सिन 75 डब्ल्यू. पी. 1.5 ग्राम या टेब्यूकोनाजोल 2.0 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
- बादलों एवं ठण्ड वाले मौसम में तेला कीट अधिक नुकसान पहुंचाता है। जहां फसल में अधिक खाद, अच्छी तरह से सिंचित और मुलायम हो, वहां लम्बे समय तक इस कीट का प्रकोप बना रहता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए (5 कीट प्रति बाली दिखाई देने पर) 1.5 मि.ली. मोनोक्रोटोफॉस

36 एसएल या 1.5 मि.ली. डाइमेथोएट 30 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- शुरू में पूरे खेत में उपचार की आवश्यकता नहीं होती। अधिक प्रकोप होने पर इस कीटनाशी का प्रयोग पूरे खेत में करें। किन्हीं दो छिड़काव के बीच 15-20 दिनों का अन्तर अवश्य रखें। माइट का प्रकोप असिंचित खेती में अधिक होता है। इसके प्रकोप से पत्तियां शिखर से पीली होने लगती हैं। माइट का प्रकोप निचली पत्तियों पर अधिक होता है। इसकी रोकथाम के लिए फॉस्फोमिडान 2 मि.ली./प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
- चूहों का प्रकोप गेहूं के खेत में होने पर जिंक फॉस्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फॉस्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें।

बाजरा एवं मक्का

- मक्का एक ग्रीष्मकालीन फसल है। इसकी बढ़वार की सभी अवस्थाओं में तापमान लगभग 18-30 डिग्री सेल्सियस के आसपास होना चाहिए। पकते समय गर्म तथा शुष्क वातावरण उपयुक्त होता है। पाला फसल की किसी भी अवस्था के लिये हानिकारक हो सकता है। असिंचित मक्के की खेती के लिए वार्षिक वर्षा 25 सें.मी. से लेकर 50.0 सें.मी. तक पर्याप्त होती है।
- जायद में फरवरी के अन्त से लेकर मध्य मार्च तक बुआई कर लेनी चाहिए। ताकि पैदावार पर कोई कुप्रभाव न पड़ सके। मक्के के बीज को बुआई से पूर्व 1 कि.ग्रा. बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कार्बेन्डाजिम से शोधित करना अति आवश्यक है। सामान्यतः मक्का के लिए 18-20



मक्का

बाजरा

- बाजरे की **संकर किस्में** जैसे-टी.जी. 37, आर.-8808, आर.-9251, आईसीजीएस-1, आईसीजीएस-44, डीएच-86, एम-52, पीबी 172, पीबी-180, जीएचबी-526, जीएचबी-558, जीएचबी-183, प्रोएग्रो 9555, प्रोएग्रो 9444, 86 एम 64, नंदी 72, नंदी 70 एवं नंदी 64 तथा बाजरे की **संकुल प्रजातियां** जैसे-पूसा कम्पोजिट-383, राज-171, आईआईसीएमबी-221 व सीटीपी-8203 प्रमुख हैं। मोटे तौर पर बाजरे की बुआई का सही समय मध्य फरवरी से लेकर जून-जुलाई तक है। जहां तक बीजों की मात्रा की बात है, तो 5-7 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर की दर से उपयुक्त रहता है। बुआई के समय पंक्तियों की दूरी 25 सें.मी. होनी चाहिए व बीजों को 2 सें.मी. से ज्यादा गहरा नहीं बोना चाहिए।
- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। सिंचित क्षेत्र के लिए 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40-50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर एवं बारानी क्षेत्रों के लिए 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 30 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग किया जा सकता है। बुआई के समय नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा लगभग 3-4 सें.मी. की गहराई पर डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की बची हुई मात्रा अंकुरण से 4-5 सप्ताह बाद खेत में बिखेरकर मृदा में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए।
- अच्छी पैदावार के लिए, समय से खरपतवार नियंत्रण अति आवश्यक है अन्यथा उपज में 50 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। बुआई से 30 दिनों तक, खेत को खरपतवारमुक्त रखना आवश्यक है। खरपतवार नियंत्रण के लिए, पहली निराई खुरपी द्वारा बुआई के 15 दिनों बाद करनी चाहिए। इसे 15 दिनों के अन्तराल पर दोहराना चाहिए। यदि फसल की बुआई मेड़ पर की गयी है तो खरपतवार नियंत्रण ट्रैक्टर एवं रिज मेकर द्वारा भी किया जा सकता है। खरपतवारनाशक एट्राजिन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर की दर से बुआई के तुरन्त बाद अथवा 1-2 दिनों बाद करने से खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। एट्राजीन 0.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व को 800 लीटर पानी में घोलकर भी छिड़काव किया जा सकता है।



कि.ग्रा./हैक्टर तथा संकर मक्का की बीज दर 12-15 कि.ग्रा./हैक्टर प्रयोग करना चाहिए। मक्का की बुआई हल के पीछे 3 से 4 सें.मी. की गहराई पर करें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सें.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सें.मी. रखनी चाहिए।

- जायद ऋतु में मक्का की उन प्रजातियों को लगाते हैं, जो **शीघ्र पकने** वाली होती हैं जैसे-पी.एम.एच.-7, पी.एम.एच.-8, पी.एम.एच.-10, कंचन, गौरव, सूर्या, तरुण, नवीन, अमर, आजाद, उत्तम, किसान, विजय व श्वेता और **हरे भुट्टे लेने** के लिए पी.ई.एम.एच.-2, पी.ई.एम.एच.-3 तथा **बेबी कॉर्न** के लिए संस्तुत प्रजातियां पूसा संकर-1, पूसा संकर-2, पूसा संकर-3, एच.एम-4, वी.एल.-42, वी.एल.-78 व प्रकाश आदि प्रमुख हैं।
- मक्का की फसल के लिए खाद का प्रयोग खेत की तैयारी के समय किया जाता है। उर्वरक में 120 कि.ग्रा.

नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 60 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर तत्व के रूप में प्रयोग करते हैं। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत तैयार करते समय प्रयोग करनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा को दो बार में खड़ी फसल में टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें। आधी मात्रा बुआई के 25-30 दिनों बाद फूल आने के समय नाइट्रोजन की शेष मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।

- मक्का की फसल में कम से कम दो निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। पहली निराई-गुड़ाई बुआई के 15-20 दिनों बाद तथा दूसरी बुआई के 30-35 दिनों बाद करें। खरपतवार नियंत्रण के लिए बुआई के 2-3 दिनों के अन्दर एट्राजीन 2.5 कि.ग्रा. या पेन्डीमेथिलिन 3.33 लीटर में से किसी एक खरपतवारनाशी का प्रयोग 600 लीटर पानी में घोलकर/ हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

मसूर, चना और मटर

- मसूर में फली बनने की अवस्था में हल्की सिंचाई करें। जब फलियां पक जायें (70-80 प्रतिशत फलियां सूखने जैसी अवस्था में आ जायें) तो फसल



मसूर



मटर

की कटाई कर लेनी चाहिए। फसल को खेत में सुखाकर दाने अलग कर लेने चाहिए। पकने के बाद फसल को अधिक समय तक खेत में खड़ी न रहने दें, क्योंकि देर से कटाई करने पर फलियों से दाने छिटकने के कारण उपज की हानि होती है।

- सामान्य रूप से चने की फसल से पत्तियां झड़ने या गिरने लगती हैं और तने के साथ-साथ फलियां भी भूरे से हल्के पीले रंग में बदलने लगती हैं। दाने सख्त व इनके अन्दर से खड़खड़ की आवाज आने लगती है। इसके साथ ही दानों में नमी 15 प्रतिशत के लगभग होती है। उस समय फसल की कटाई हंसिया या शक्तिचालित यंत्रों से करते हैं। किसान भाइयों को यह भी ध्यान देना चाहिए कि फसल के अधिक पकने से फलियां टूटकर मृदा में गिर जाती हैं, जिससे उत्पादन पर असर पड़ता है। काटी गयी फसल को एक स्थान पर इकट्ठा करके खलिहान में लगभग 4-5 दिनों तक फसल को धूप में सुखाकर मड़ाई की जाती है। मड़ाई (थ्रेसिंग) हाथ से पीटकर, बैलों द्वारा या थ्रेसर से कर सकते हैं या कम्बाइन द्वारा कटाई एवं मड़ाई का कार्य पूर्ण करें। दानों को तब तक सुखाया जाता है, जब तक कि उनमें 10-12 प्रतिशत नमी न रहे। देर से बोई गई सिंचित चने की फसल में यदि आवश्यकता हो, तो दूसरी सिंचाई बुआई के 100 दिनों बाद की जा सकती है।

- काबुली चना के लिए यह समय बहुत संवेदनशील माना जाता है। फसल की परिपक्वता का अनुमान पत्तियों एवं दानों की स्थिति पर निर्भर करता है।
- मार्च में हरी मटर कम होने के साथ-साथ दाने वाली मटर की फसल

तैयार हो जाती है। मटर की फलियां सूखकर पीली पड़ जाएं, तो उनकी कटाई कर लेनी चाहिए। गहाई करने के बाद मटर के दानों को इतना सुखाएं कि सिर्फ 8 प्रतिशत नमी ही बचे। मटर की फसल से प्रायः 100-120 क्विंटल प्रति हैक्टर (हरी फलियां) एवं 15-20 क्विंटल प्रति हैक्टर दानों की पैदावार प्राप्त हो जाती है। समय से कटाई भी बीजों को बिखराव से बचाती है। जब मटर की फसल पूरी तरह से पक जाए उसे धूप में पर्याप्त सुखाने के बाद ही मड़ाई करें।

- खेसारी (लेथाइरस सैटाइवस) की फसल हल्की पीली पड़ने पर कटाई करें। हंसिए से फसल की कटाई की जाती है। अधिक पक जाने पर फलियां चटकने लगती हैं। फसल की गहाई कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर (8-10 प्रतिशत नमी) भंडारण करने पर घुन नहीं लगता है। इसके साथ ही भंडारगृह में घुन का उपचार अवश्य करें।

चना फलीछेदक का नियंत्रण



यह एक बहुभक्षी और चने की फसल में लगने वाला प्रमुख कीट है। चना फलीछेदक की प्रथम अवस्था की सूंडियां कोमल पत्तियों को खुरच-खुरच कर खाती हैं। यह सूंडी 5-6 बार केंचुल उतारती है और धीरे-धीरे बड़ी होती जाती है। तीसरी अवस्था की सूंडियां चना की फलियों में मुंह घुसाकर दाना खाती हैं। दाना खाने के बाद सूंडी मुंह निकाल लेती है और फिर दूसरी फली को छेदकर दाना खाती है। इस कारण फलियों में गोल-गोल छेद बन जाते हैं। एक सूंडी अपने जीवनकाल में 30-35 दाने खाती है। इस प्रकार यह कीट चना फसल को बहुत हानि पहुंचाती है। चने में फलीछेदक के नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 0.02 प्रतिशत घोल (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) या साइपरमैथरीन (25 ई.सी.) 125 मि.ली. या कार्बोरिल (50 डब्ल्यू.पी.) 1000 मि.ली. या मोनोक्रोटोफॉस (36 ई.सी.) 750 मि.ली. या क्यूनालफॉस (25 ई.सी.) 1.5 लीटर या डाइमिथ्रोएट (30 ई.सी.) 400 मि.ली., 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से पहला छिड़काव अवश्य करें। चने की फसल में फलीछेदक कीट के नियंत्रण के लिए एन.पी.वी. (न्यूक्लियर पॉलीहेड्रोसिस वायरस) 250-350 शिशु समतुल्य 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। चने में 5 प्रतिशत एनएसकेई या 3 प्रतिशत नीम तेल तथा आवश्यकतानुसार कीटनाशी का प्रयोग करें।

ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द

- मूंग व उड़द की खेती उत्तर भारत की बलुई-दोमट मृदा से लेकर मध्य भारत की लाल एवं काली मृदा में भली-भाँति की जा सकती है। इसकी खेती के लिए अच्छे जल-निकास वाली बलुई-दोमट मृदा उपयुक्त मानी जाती है। बुआई से पहले खेत में उचित नमी होना अति आवश्यक है। बारीक, भुरभुरे मृदा वाले व चूर्णिल खेत मूंग व उड़द की खेती के लिये अच्छा माना जाता है। खेत में 2-3 बार जुताई/हैरोइंग पर्याप्त होती है। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य लगायें, जिससे मृदा की नमी संरक्षित रहे। बुआई का उपयुक्त समय वायुमंडलीय तापमान, मृदा की नमी व फसल प्रणाली पर निर्भर करता है।
- ग्रीष्मकालीन/बसन्त मूंग की बुआई का उपयुक्त समय 10 मार्च से 10 अप्रैल तक है। उड़द की बुआई का उपयुक्त समय 15 फरवरी से 15 मार्च तक है। सरसों, गेहूँ और आलू की कटाई के उपरान्त 70 से 80 दिनों में पकने वाली प्रजातियों की बुआई की जा सकती है।



मूंग

किसी कारणवश खेत समय पर तैयार न हो, तो वहाँ पर मूंग एवं उड़द की 60-65 दिनों में पकने वाली प्रजातियों की बुआई 15 अप्रैल के बाद कर सकते हैं। यदि किसान भाई मूंग एवं उड़द की बुआई देर से करते हैं, तो

नमी की कमी फसल की धीमी वृद्धि, अगली फसल की बुआई में देरी एवं रोगों व कीटों का अधिक प्रकोप की समस्याएँ आ सकती हैं।

- मूंग की उन्नत प्रजातियाँ जैसे-पूसा 1431, पूसा 9531, पूसा रत्ना, पूसा 672, पूसा विशाल, के.पी.एम. 409-4 (हीरा), वसुधा (आई.पी.एम. 312-20), सूर्या (आई.पी.एम. 512-1), कनिका (आई.पी.एम. 302-2), वर्षा (आई.पी.एम. 2 के 14-9), विराट (आई.पी.एम. 205-7), शिखा (आई.पी.एम. 410-3), आई.पी.एम. 02-14, आई.पी.एम. 02-3, सम्राट, मेहा, अरुण (केएम 2328), आर.एम.जी.-62, आर.एम.जी. 268 प्रमुख हैं।
- उड़द की उन्नत प्रजातियाँ जैसे-पीडीयू 1 (बसन्त बहार), के.यू.जी. 479, मुलुंद्र उड़द 2 (के.पी.यू. 405), कोटा उड़द 4 (के.पी.यू. 12-1735), कोटा उड़द 3 (के.पी.यू. 524-65), केयूजी 479, कोटा उड़द 4 (के.पी.यू. 12-1735), इंदिरा उड़द प्रथम, हरियाणा उड़द-1 (यू.एच. उड़द-04-06) व सुजाता प्रमुख हैं।
- बीज दर का निर्धारण मुख्यतः बीज के आकार, नमी की स्थिति, बुआई का समय, पौधों की पैदावार तथा उत्पादन तकनीक पर निर्भर होता है। ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द की बुआई के लिये 20-25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर बीज पर्याप्त होता है। ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द की फसल में पंक्ति से

उड़द में खरपतवार रोकथाम



बुआई के प्रारंभिक 4-5 सप्ताह तक खरपतवार की समस्या अधिक रहती है। पहली सिंचाई के बाद निराई करने से खरपतवार नष्ट होने के साथ-साथ मृदा में वायु का संचार भी होता है, जो मूल ग्रन्थियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमंडलीय नाइट्रोजन एकत्रित करने में सहायक होता है। खरपतवारों के रासायनिक नियंत्रण हेतु 2.5-3.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर बुआई के 2 से 3 दिनों के अन्दर अंकुरण के पूर्व छिड़काव करने से 4 से 6 सप्ताह तक खरपतवार नहीं निकलते हैं। चौड़ी पत्ती तथा घास वाले खरपतवार को रासायनिक विधि से नष्ट करने के लिये एलाक्लोर की 4 लीटर या फ्लूक्लोरालिन (45 ई.सी.) नामक रसायन की 2.22 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के तुरन्त बाद या अंकुरण से पहले छिड़काव कर देना चाहिए। अतः बुआई के 15-20 दिनों के अन्दर कसोले से निराई-गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट कर देना चाहिए।

पंक्ति की दूरी 30 सें.मी. होनी चाहिए। बीज की बुआई कूड़ों में या सीडड्रिल से पंक्तियों में की जानी चाहिए तथा बीजों को 4-5 सें.मी. गहराई में बोना चाहिए।

- बीजों के अच्छे अंकुरण तथा स्वस्थ पौधों की पर्याप्त संख्या हेतु कवकनाशी से बीज उपचार के लिये प्रति कि.ग्रा. बीज का 2.5 ग्राम थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम से उपचार करने के बाद राइजोबियम कल्चर से भी बीजोपचार करना चाहिए। बुआई के समय बीज डालने से पहले सल्फर धूल का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। इसी प्रकार फॉस्फेट घुलनशील बैक्टीरिया (पीएसबी) से बीज का शोधन करना भी लाभदायक होता है।
- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। मूंग की फसल के लिये 10-15 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 45-50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 50 कि.ग्रा. पोटाश एवं 20-25 कि.ग्रा. सल्फर/हैक्टर की दर से बुआई के समय कूड़ों में देना चाहिए। कुछ क्षेत्रों में जस्ता या जिंक की कमी की अवस्था में 20 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए। उड़द की फसल के लिये नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं गंधक क्रमशः 15, 45 एवं 20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से बुआई के समय कूड़ों में देना चाहिए। नवीनतम प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव यदि फली बनने की अवस्था में किया जाये, तो उपज में निश्चित रूप से वृद्धि होती है।



सरसों

राई-सरसों, अलसी और सूरजमुखी

- जब सरसों के पत्ते झड़ने लगें, फलियां पीली पड़ने लगें और 75 प्रतिशत फलियां सुनहरे रंग की हो जायें, तो फसल की कटाई कर लें। अन्यथा कटाई में देरी होने से दाने खेत में झड़ने की आशंका रहती है। फसल की कटाई के बाद छोटे-छोटे बंडलों में बांधकर खेत में छोड़ देते हैं। पौधे पूर्ण रूप से सूख जाने पर बैलों या ट्रैक्टर से मड़ाई करके दाने अलग कर लेने चाहिए।
- कटाई की हुई सरसों को खलिहान में अधिक समय तक नहीं रखें, अन्यथा पेन्टेड बग कीट दानों का तेल चूस लेगा, जिससे हानि होने की आशंका रहेगी। यदि किन्हीं कारणों से खलिहान में काटी गई फसल रखनी जरूरी हो,

तो खलिहान की मृदा में मिथाइल पेराथियान 2 प्रतिशत पाउडर का छिड़काव पहले ही कर दें। दानों को अच्छी प्रकार से सुखाकर ही भंडारण करना चाहिए।

- उन्नत किस्म के बीजों व उचित सस्य क्रियाएं तथा पौध संरक्षण अपनाने पर तोरिया की उपज 15-20 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा राया व सरसों की उपज 22-25 क्विंटल प्रति हैक्टर प्राप्त की जा सकती है।
- अलसी की फसल लगभग 120 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी कटाई उस समय पर करें, जब पौधे सुनहरे पीले रंग के होने लगते हैं और कैप्सूल भूरे रंग के साथ सूखने और खुलने लगते हैं। पौधों की कटाई के बाद इन्हें किसी एक स्थान पर रखकर इनसे बीजों को झाड़कर अलग कर लें।
- बीजों को अलग करने के बाद इसके पौधों से रेशे निकाले जाते हैं। इसके लिए पौधे की शाखाओं को हटाकर मुख्य तने को अलग कर लें। इन अलग किये हुए सभी भागों के अलग-अलग बंडल बनाकर तैयार कर लें। तैयार किये गए बंडलों को दो से तीन दिनों तक पानी में सड़ाकर उसके बाद पानी से निकालकर अच्छी तरह से साफ पानी से धोया जाता है व पानी से धोने के बाद इन्हें सुखा दिया जाता है। बंडलों के सूखने के बाद इनकी मुगरी से पिटाई करने के बाद इनसे रेशे निकाले जाते हैं।



सूरजमुखी

- सूरजमुखी के फूल, सूरज की दिशा में मुड़ जाने के कारण इसे सूरजमुखी कहा जाता है। यह एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। बेहतर मुनाफा देने वाली इस फसल को नगदी खेती के रूप में भी जाना जाता है। सूरजमुखी देखने में जितना खूबसूरत होता है, स्वास्थ्य के लिए उससे कहीं ज्यादा फायदेमंद भी होता है। इसके फूलों व बीजों में कई औषधीय गुण छिपे होते हैं। दिल को स्वस्थ रखने से लेकर यह कैंसर जैसे जानलेवा रोग से बचाव करता है। इसके अलावा सूरजमुखी के तेल का सेवन करने से लीवर सही तरीके से काम करता है और ऑस्टियोपरोसिस जैसे हड्डियों के रोग भी नहीं होते हैं। यह त्वचा को निखारने के साथ बालों को भी मजबूत बनाता है। इसका तेल हल्के रंग के अच्छे स्वाद वाला और उच्च मात्रा में लिनोलिक एसिड वाला होता है, जो कि दिल के रोगियों के लिए फायदेमंद होता है। सूरजमुखी के बीज में खाने योग्य तेल की मात्रा 48 से 53 प्रतिशत तक होती है।
- सूरजमुखी की उन्नत संकर किस्में जैसे-बी.एस.एच.-1, एल.एस.एच.-1, एल.एस.एच.-3, के.वी.एस.एच.-1, के.वी.एस.एच.-41, के.वी.एस.एच.-42, के.वी.एस.एच.-44, के.वी.एस.एच.-53, के.वी.एस.एच.-78, डी.आर.एस.एच.-1, एम.एस.एफ.एच.-17, मारुति, पी.एस.एफ.एच.-118, पी.एस.एफ.एच.-569, सूर्यमुखी, एस.एच.-332, पी.के.वी.एस.एच.-27, डी.एस.एच.-1, टी.सी.एस.एच.-1, एन.डी.एस.एच.-1, एल.एस.एफ.एच.-35, पी.एस.एफ.एच.-118, एच.एस.एफ.एच.-848, डी.आर.एस.एच.-1, तुंगा तथा सूरजमुखी की उन्नत संकुल किस्में जैसे-ई.सी.-68415, सह.-1, सह.-4, सी.ओ.-2, सी.ओ.-3, सी.ओ.-5, एस.एस.-56, गौसुफ-15, पी.के.वी.एस.एफ.-9, रास-11 आदि हैं।
- सूरजमुखी की बुआई 15 मार्च तक पूरी कर लें। संकर प्रजाति का बीज 5-6 कि.ग्रा./हैक्टर तथा संकुल प्रजाति का स्वस्थ बीज 12-15 कि.ग्रा./हैक्टर पर्याप्त होता है। बुआई से पहले कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम अथवा थीरम

की 2.5 ग्राम मात्रा से बीज उपचार अवश्य करें।

- सामान्यतः सूरजमुखी की फसल में उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए। मृदा परीक्षण न होने की दशा में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 40 कि.ग्रा. पोटैश एवं 200 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति हैक्टर की दर से बुआई के समय कूड़ों में प्रयोग करें। सूरजमुखी की बुआई के 15-20 दिनों बाद खेत से फालतू पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 20 सें.मी. कर लें और उसके पश्चात सिंचाई करें।
- सूरजमुखी व उड़द की अन्तर्वर्ती खेती के लिए इसकी दो पंक्तियों के बीच उड़द की दो से तीन पंक्तियां लेना उत्तम रहता है।
- इसकी फसल में यदि कटुआ सूंडी या हरे रंग की सूंडी का आक्रमण हो, तो 50 मि.ली. सायपरमेथ्रिन 25 ई.सी. या 150 मि.ली. डैकामेथ्रिन 2.8 ई.सी. या 80 मि.ली. फैनवालरेट 20 ई.सी. को 100-150 लीटर पानी में मिलाकर/एकड़ छिड़काव करें।

मूंगफली

- उष्ण कटिबंधीय पौधा होने के कारण मूंगफली को लम्बे समय तथा गर्म मौसम की आवश्यकता पड़ती है। अंकुरण और प्रारंभिक वृद्धि के लिए 14-15 डिग्री सेल्सियस तापमान का होना आवश्यक है। फसल के जीवनकाल में पर्याप्त सूर्यप्रकाश का

उच्च तापमान तथा सामान्य वर्षा का होना अति उत्तम रहता है। फसल की वृद्धि के लिए सर्वोत्तम तापमान 70-80 डिग्री फॉरेनहाइट होता है। मूंगफली की खेती उन सभी स्थानों पर, जहां 60-130 मि.ली. वार्षिक वर्षा होती है, की जाती है। बहुत अधिक वर्षा भी मूंगफली की खेती के लिए हानिकारक होती है। फसल की कटाई के समय तेज धूप होना अति लाभदायक होता है। इस अवस्था में उत्पाद भलीभांति सूख जाता है तथा इसके गुण भी अच्छे होते हैं।

- मूंगफली की खेती के लिए अच्छी जलधारण क्षमता वाली बलुई, बलुई दोमट, दोमट और काली मृदा अधिक उपयुक्त होती है परन्तु बलुई दोमट मृदा, जिसका पी-एच मान 5.5-7.0 के मध्य हो, मूंगफली के लिए सबसे उत्तम होती है। इसकी अच्छी उपज के लिए मृदा हल्की होनी चाहिए और जीवांश पदार्थ पर्याप्त मात्रा में होने चाहिए। भारी मृदा की अपेक्षा हल्की मृदाओं की मूंगफली का रंग अच्छा होता है। छिलका पतला होता है और अधिक उपज देता है। मृदा उचित जल-निकास वाली हो। बुआई पंक्तियों में करनी चाहिए, पंक्ति से पंक्ति और पौधे से पौधे की दूरी 25-30 × 8-10 सें.मी. रखनी चाहिए। जायद की फसल में 95-100 कि.ग्रा./हैक्टर बीज बुआई में लगता है, बोनो से पहले बीज को 2 ग्राम थीरम और 1 ग्राम 50 प्रतिशत



मूंगफली

कार्बेन्डाजिम के मिश्रण को 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करना चाहिए। इस शोधन के पांच-छह घण्टे बाद बोने से पहले बीज को मूंगफली के राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर लेना चाहिए।

- मूंगफली की उन्नत प्रजातियां जैसे-टी. जी. 37 ए, आर-8808, एस.बी-11, आई.सी.जी.एस.-1, आई.सी.जी.एस.-44, प्रताप राज मूंगफली, आई.सी.जी.एस.-11, आई.सी.जी.एस.-37, जवाहर मूंगफली 23 (जे.जी.एन.-23), जे एल.-501, विकास, डीएच-86, आर-9251, टी 64 प्रमुख हैं। इसकी खेती आलू, सब्जी मटर, एवं राई की कटाई के बाद खाली भूमि में की जा सकती है।

औषधीय फसलें

- मेंथा में 10-12 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहें तथा फसल में 40-50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की तीसरी व अंतिम टॉप ड्रेसिंग अवश्य करें। मेंथा फसल की कटाई प्रायः दो बार की जाती है। पहली कटाई 100-120 दिनों पर, जब पौधों में कलियां आने लगें, तब की जाती है। दूसरी कटाई, पहली कटाई के लगभग 70-80 दिनों पर करें। पौधों की कटाई मृदा की सतह से 4-5 सें.मी. ऊंचाई पर करनी चाहिए। कटाई के बाद पौधों को 2-3 घण्टे तक खुली धूप में छोड़ दें। इसके बाद कटी फसल को छाया में हल्का सुखाकर जल्दी आसवन विधि द्वारा यंत्र से तेल निकाल लें।



मेंथा

गन्ना

- पश्चिमी तथा मध्य क्षेत्रों के लिए गन्ने की शीघ्र पकने वाली उन्नत प्रजातियां जैसे-सीओ 98014 (करन-1), सीओ 0118 (करन 2), सीओ 0238 (करन-4), सीओ 0214 (करन-5), सीओ 0238 (करन-6), सीओ 0237 (करन-8), सीओ 05011 (करन-9), सी.ओ.एच.-92, सी.ओ.एच.-56, सी.ओ.जे.-64, को. पन्त-84211, को.शा. 92254, को.शा. 8436, को.शा. 684 एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए को.शा. 8436 व को.शा. 687 प्रमुख हैं तथा पश्चिमी एवं मध्य उत्तर प्रदेश के लिए मध्य एवं देर से पकने वाली गन्ने की उन्नत प्रजातियां जैसे-सी.ओ.एच.-110, सी.ओ.एस.-767, सी.ओ.एच.-1148, सी.ओ.एच.-199, सी.ओ.एच.-99, सी.ओ.एस.-8436, सी.ओ.-7717, को.शा. 269, को.शा. 8118, को.शा. 7918, को.शा. 802 व को.शा. 767 तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए यू.पी. 12, यू.पी. 15, को.शा. 8407, को.शा. 767 एवं को.शा. 7198 प्रमुख हैं।



- गन्ने की बुआई 15-20 मार्च तक पूरी कर लें। तीन आंख वाले गन्ने के टुकड़ों को 5 मिनट तक 250 ग्राम एरिटॉन के 100 लीटर पानी के घोल में उपचारित करें। गन्ने की बुआई 75-90 सें.मी. दूरी पर बनी कूड़ों में 10 सें.मी. की गहराई पर करें। गन्ने की बुआई के लिये एक आंख वाले टुकड़े 1,33,750, दो आंख वाले टुकड़े 60,000-65,000 हजार एवं तीन आंख वाले टुकड़े 40,000-45,000 हजार या 60-70 क्विंटल/हैक्टर बीज के लिए पर्याप्त होते हैं।
- बसंतकालीन गन्ने के साथ अन्तर्वर्ती खेती करना अत्यन्त लाभदायक रहता है। 75 सें.मी. की दूरी पर बोई गयी गन्ने की दो पंक्तियों के बीच की दूरी में उड़द की दो पंक्ति आसानी से ली जा सकती हैं। ऐसा करने पर उड़द के लिए अतिरिक्त उर्वरक की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- गन्ने की फसल में मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। यदि मृदा परीक्षण न हुआ हो तो बुआई के समय प्रति हैक्टर 60-75 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश का प्रयोग करें। गन्ने की पेड़ी की फसल में प्रति हैक्टर 90 कि.ग्रा. नाइट्रोजन गन्ना काटने के बाद तथा इतनी ही तीसरी मात्रा सिंचाई के समय प्रयोग करें। गन्ने की पेड़ी से अच्छी फसल लेने के लिए खरपतवार नियंत्रण हेतु, उगने से पहले एट्राजिन 2 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व के रूप में प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। पेड़ी की फसल में 12-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई अवश्य करते रहें।
- गन्ने की फसल उगते समय दीमक पोरी की आंखों को नष्ट कर देती है। कनसुए के आक्रमण से पौधे सूखने लग जाते हैं। अतः इन दोनों कीटों से फसल को बचाने के लिए बुआई के समय 2.5 लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. या 2.5 लीटर गामा बी.एच.सी. 20 ई.सी. या 600 मि.ली. फिप्रोलिन 5 एस.सी. को 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ कूड़ों में बीज के ऊपर फव्वारे से छिड़काव करें। 150 मि.ली. इमिडाक्लोरोप्रिड 200 एम.एल. को 250-300 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है।

सब्जी फसलें

- ग्रीष्मकालीन लोबिया की खेती के लिए गर्म व आर्द्र जलवायु उपयुक्त है। तापमान 24-27 डिग्री सेल्सियस के बीच ठीक रहता है। अधिक ठंडे मौसम में पौधों की बढ़वार रुक जाती है। सभी प्रकार की मृदाओं में इसकी खेती की जा सकती है। मृदा का पी-एच मान 5.5-6.5 उचित है। मृदा में जल-निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए तथा क्षारीय मृदा इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है। ग्रीष्मकालीन लोबिया की उन्नत प्रजातियां जैसे-पूसा कोमल (बैक्टीरियल ब्लाइट प्रतिरोधी), पूसा सुकोमल (मोजैक वायरस प्रतिरोधी), अर्का गरिमा, काशी गौरी तथा काशी कंचन, काशी उन्नति, काशी निधि, लोबिया-263 आदि प्रमुख हैं। इसकी बुआई फरवरी-मार्च में तथा बीज दर 12-20 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से पर्याप्त होती है। बुआई के लिए पंक्ति से पंक्ति तथा बीज से बीज की दूरी 45-60×10 सें.मी. रखी जाती है। बुआई के समय मृदा में बीज के जमाव हेतु पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है। गोबर या कम्पोस्ट खाद 20-25 टन मात्रा बुआई से 1 माह पहले खेत में डाल दें। लोबिया एक दलहनी फसल है, इसलिए नाइट्रोजन की 20 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 60

भिंडी



ग्रीष्मकालीन भिंडी की उन्नत प्रजातियां जैसे-पूसा ए-5, पूसा सावनी, पूसा मखमली, बी.आर.ओ-3, बी.आर.ओ-4, उत्कल गौरव और वायरस प्रतिरोधी किस्में: पूसा ए-4, परीभणी क्रांति, पंजाब-7, पंजाब-8, आजाद क्रांति, हिसार उन्नत, वर्षा उपहार, अर्का अनामिका आदि प्रमुख हैं। बलुई दोमट व दोमट मृदा, जिसका पी-एच मान 6.0-6.8 हो के साथ सिंचाई की सुविधा व जल-निकास का अच्छा प्रबंध होना चाहिए। ग्रीष्मकालीन मौसम में भिंडी की बुआई 20 फरवरी से 15 मार्च तक उपयुक्त है और बीज दर 20-22 कि.ग्रा./हैक्टर की आवश्यकता है। बीज की बुआई सीड-ड्रिल से या हल की सहायता से गर्मियों में 45×20 सें.मी. की दूरी पर करें एवं बीज की गहराई लगभग 4.5 सें.मी. रखें। बुआई से पहले अच्छी तरह सड़ी गोबर या कम्पोस्ट खाद लगभग 20-25 टन/हैक्टर अच्छी तरह मृदा में मिला दें। तत्व के रूप में बुआई के समय नाइट्रोजन 40 कि.ग्रा. की आधी मात्रा, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर की दर से अंतिम जुताई के समय प्रयोग करें तथा आधी बची हुई नाइट्रोजन की मात्रा फसल में फूल आने की अवस्था में डालें।



ग्रीष्मकालीन लोबिया

कि.ग्रा. तथा पोटाश 50 कि.ग्रा./हैक्टर खेत में अंतिम जुताई के समय मृदा में मिला देनी चाहिए एवं 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की मात्रा फसल में फूल आने के समय प्रयोग करें।

- कट्टूवर्गीय सब्जियां मुख्य रूप से गर्मी नहीं सहन कर सकतीं, इसलिए इन्हें जायद ऋतु में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इनकी खेती मुख्य रूप से अधिकतम 40 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम 20 डिग्री सेल्सियस के बीच के तापमान में ही की जा सकती है। इस वर्ग की सब्जियां सूर्य की रोशनी व तापमान के उतार-चढ़ाव से अत्यधिक प्रभावित होती हैं। रोशनी व गर्मी की अधिकता और लम्बे प्रकाश काल में मादा फूलों की अपेक्षा नर फूल अधिक बनते हैं, जिससे पैदावार काफी कम हो जाती है। इसके लिए उचित तापमान 25-30 डिग्री सेल्सियस है।

- इस वर्ग की सब्जियों के लिए दोमट या बलुई दोमट मृदा उपयोगी मानी जाती है। इसमें अधिक जैविक पदार्थ व अच्छे जल-निकास वाली मृदा की आवश्यकता होती है। मृदा न ही अम्लीय और क्षारीय हरे, बल्कि उसका पी-एच मान 6-7 की बीच होना चाहिए। खेत की पहली जुताई किसी मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए तथा उसके बाद 2 या 3 जुताई सामान्य तरीके से कर सकते हैं। खेत में पाटा लगाकर मृदा को भुरभुरा व खेत को समतल बना लेना चाहिए। बीज बुआई के लिए आवश्यकतानुसार नालियां बना लें। जायद ऋतु में उगाने के लिए कट्टवर्गीय फसलों को जनवरी से मार्च तक बोया जाता है। बीजों की सीधे खेत में बुआई फरवरी-मार्च में की जाती है।
- तोरई की फसल में खाद व उर्वरकों का प्रयोग मृदा की जांच के अनुसार करना चाहिए। कम्पोस्ट या सड़ी गोबर की खाद 200 क्विंटल प्रति हैक्टर की दर से बीज की बुआई के लगभग एक महीने पहले खेत की तैयारी के समय अच्छी प्रकार से खेत में मिला देते हैं। अच्छी उपज हेतु 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर खेत में अंतिम जुताई के समय भूमि में मिला देना चाहिए।
- करेला की फसल में खाद व उर्वरकों का प्रयोग मृदा की जांच के अनुसार करना चाहिए। एक हैक्टर खेत के लिए 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 25-30 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 25-30 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर की दर से तत्व के रूप में देनी चाहिए।
- चप्पन कददू फसल की बुआई फरवरी-मार्च में करते हैं। चप्पन कददू में 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर और कददू में 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर की दर से तत्व के रूप में देनी चाहिए।
- खरबूजा की फसल के लिए बलुई दोमट तथा जीवांशयुक्त चिकनी मृदा, जिसमें जल-धारण क्षमता अधिक हो पी-एच मान 6.0-7.0 हो, उपयुक्त

मिर्च

- मिर्च की खेती के लिए 15-35 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान होने पर इसके फूल एवं फल गिरने लगते हैं। मिर्च की खेती सभी प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है। अच्छे जल-निकास वाली एवं कार्बनिक युक्त बलुई-लाल दोमट मृदा, जिसका पी-एच मान 6.0 से 7.5 हो, मिर्च की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होती है। मिर्च की उन्नत प्रजातियां जैसे-पूसा सदाबहार, पूसा ज्वाला, अर्का लोहित, अर्का सुफल, अर्का श्वेता, अर्का हरिता, मथानिया लोंग, पंत सी-1, पंत सी-2, जी-3, जी-5, हंगेरियन वैक्स (पीले रंग वाली), जवाहर 218, आर.सी.एच.-1, एल.सी.ए.-206 आदि प्रमुख हैं।



- गर्मी की फसल के लिए फरवरी-मार्च में पौधशाला में बीजों की बुआई की जाती है। एक हैक्टर पौध तैयार करने के लिए संकर और अन्य प्रजातियों के लिए 250 ग्राम और 1.0-1.5 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होते हैं। नर्सरी के लिए 1 मीटर चौड़ी, 3 मीटर लंबी और 10 से 15 सें.मी. जमीन से उठी हुई क्यारियां तैयार करें। बीजों की बुआई से पूर्व बाविस्टिन या कैप्टॉन से 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। पौधशाला में कीटों की रोकथाम हेतु 2 ग्राम फोरेट 10 वर्गमीटर की दर से जमीन में मिलाएं या मिथाइल डिमेटोन 1 मि.ली./लीटर पानी या एसीफेट 1 मि.ली./लीटर पानी का पौधों पर छिड़काव करें।
- नर्सरी में बुआई के 4-5 सप्ताह बाद पौध रोपण के लिए तैयार हो जाती है। गर्मी की फसल में पंक्ति से पंक्ति व पौधे से पौधे की दूरी 60×30-45 सें.मी. रखें। जायद मिर्च रोपाई हेतु प्रति हैक्टर 70 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 50-60 कि.ग्रा. पोटाश भूमि में अंतिम जुताई के समय मिला दें। शेष बची हुई आधी मात्रा, 30 व 45 दिनों बाद टॉप ड्रेसिंग के द्वारा खेत में डाले एवं तुरंत सिंचाई कर दें। मिर्च की फसल को वायरस रोग व कीटों से बचाने के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर 10-15 दिनों के अंतराल पर एक एकड़ में खड़ी फसल पर छिड़काव करें।

होती है। बसंत-गर्मी की फसल बुआई फरवरी-मार्च में करते हैं। खरबूजे की फसल में 90 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 70 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 60 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर की दर से देना चाहिए।

- तरबूज की खेती विभिन्न प्रकार की मृदा में की जाती है, लेकिन बलुई मृदा इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है। इसकी खेती के लिए 65 कि.ग्रा.

नाइट्रोजन, 56 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश/ हैक्टर की दर से अवश्य देना चाहिए।

- खीरे की खेती के लिए बलुई दोमट या दोमट मृदा, जिसमें जल-निकास का उचित प्रबंध हो सर्वोत्तम पायी गयी है। मृदा में कार्बन की मात्रा अधिक तथा पी-एच मान 6.5-7.0 होना चाहिए। खीरे की खेती के लिए 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा

सारणी: कद्दूवर्गीय फसलों की संकर व सामान्य उन्नत किस्में

फसल	संकर एवं उन्नत प्रजातियां	बीज दर (कि.ग्रा./हैक्टर)	बुआई की दूरी (सं.मी.)		बीज की गहराई (सं.मी.)
			पंक्ति से पंक्ति	पौध से पौध	
लौकी	पूसा हाइब्रिड-2, पूसा हाइब्रिड-3, पूसा मेघदूत, पूसा मंजरी, पंत संकर लौकी-4, पूसा नवीन, पूसा समृद्धि, पूसा संतुष्टि, पूसा संदेश, पंजाब कोमल, पंजाब राउन्ड, आजाद, नूतन, राजेन्द्र, काशी गंगा, काशी बहार तथा नरेंद्र रश्मि तथा अर्का बहार। 	3.0-6.0	200-300	100-150	2.5
चप्पन कद्दू	पूसा अलंकार, पूसा पसंद, पैटी पैन, अर्ली मैलो, प्रोलिफिक, आस्ट्रेलियन ग्रीन, पंजाब चप्पन कद्दू न.-1 	6.0-7.0	90-120	45-75	1.5-2.0
काशीफल	पूसा संकर-1, पूसा विश्वास, पूसा विकास, काशी हरित, सोलन बादामी एवं नरेन्द्र अमृत।	7.0-9.0	250-300	150-180	2.0-2.5
कद्दू	पूसा हाइब्रिड-1, पूसा विकास, पूसा विश्वास, अर्का चन्दन, काशी हरित।				
खीरा	पूसा संयोग, पूसा उदय, पूसा बरखा, पंत खीरा-1, जापानीज लॉंग ग्रीन, पोइनसेट, स्वर्ण श्वेता, स्वर्ण अगेती, पंजाब-1। 	2.5-3.5	150	60-70	1.0
खरबूजा	पूसा रसरज, पूसा मधुरस, पूसा सरदा, पूसा शर्बती, पूसा मधुरिमा, पंजाब संकर-1, एम. 9 व वाई. 5, हरा मधु, पंजाब सुनहरी, दुर्गापुरा मधु, लखनऊ सफेदा, काशी मधु, अर्का जीत, अर्का राजहंस।	4.0-6.0	150-200	60-90	1.0
तरबूज	अर्का ज्योति, अर्का आकाश, अर्का ऐश्वर्य, अर्का मुथु, सुगर बेबी, अर्का मानिक, असायी यामातो, स्पेशल-1, उन्नत शिपर, दुर्गापुरा मीठा, दुर्गापुरा लाल। 	3.5-5.0	250-350	60-120	2.0-4.0

चिकनी तोरई	पूसा सुप्रिया, पूसा चिकनी, पूसा स्नेहा, काशी दिव्या, स्वर्णप्रभा, कल्याणपुर हरी चिकनी, पंत चिकनी तोरई-1 एवं राजेंद्र नेनुआ-11	2.5-3.6	180-250	60-120	1.5-2.0
					
धारीदार तोरई	पूसा नसदार, पूसा नूतन, स्वर्ण मंजरी, पंजाब सदाबहार, अर्का सुजात, अर्का सुमित एवं सतपुतिया।	3.6-5.0	180-250	60-120	2.0-2.5
करेला	पूसा संकर-1, पूसा रसदार, पूसा पूर्वी, पूसा औषधि, पूसा हाइब्रिड-2, पूसा विशेष, पूसा दो मौसमी, अर्का हरित, कल्याणपुर सोना, कल्याणपुर बारामासी, पंजाब-14, पंत करेला-1, एन.डी.वी. -1, सोलन ग्रीन, सोलन सफेद, काशी उर्वशी एवं अर्का हरित।	4.5-6.0	150-200	60-110	2.0-2.5
					
टिण्डा	पूसा रौनक, पंजाब टिंडा, अर्का टिंडा, अर्का टिण्डा, हिसार सेलेक्शन-1, बीकानेरी ग्रीन, लुधियाना स्पेशल (5-48)।	5.0-6.0	150-200	30-45	2.0
पेठा	पूसा उज्ज्वल, पूसा शक्ति, पूसा श्रेयाली, पूसा उर्मी, काशी धवल, काशी उज्ज्वल, काशी सुरभि, सी ओ-1 एवं सीओ-2।	5.0-6.0	180-250	60-120	2.0

60 कि.ग्रा. पोटाश/हैक्टर की दर से देने चाहिए।

- आलू के खेतों का मुआयना करें, क्योंकि मार्च तक ज्यादातर आलू की फसल तैयार हो जाती है। अगर आलू भी तैयार हो चुके हों, तो उनकी खुदाई का काम खत्म करें। आलू निकालने के बाद खेत को आगामी फसल के लिए तैयार करें।
- टमाटर की अच्छी पैदावार के लिए तापमान का बहुत बड़ा योगदान होता है। तापमान 18 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच उपयुक्त रहता है। फल लगने के लिए रात का आदर्श तापमान 15 से 20 डिग्री सेल्सियस के बीच रहना चाहिए। इसके लाल रंग के निर्माण के लिए 21-24 डिग्री सेल्सियस तापमान



आलू

टमाटर



इसकी अच्छी बढ़वार के लिए खरपतवार नियंत्रण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। खरपतवार, टमाटर की फसल से प्रकाश, पानी एवं पोषक तत्वों के लिए प्रतियोगिता करते हैं। रोगों व कीट को शरण देते हैं, जिससे फलों की उपज को 20-80 प्रतिशत तक कम कर देते हैं। ये खरपतवार फसलों में शुरुआती 4-6 सप्ताह तक अधिक नुकसान करते हैं। पहली दो सिंचाई के बाद हल्की निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए पेन्डीमिथेलीन (30 ई.सी.) 400 मि.ली. की मात्रा का प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में रोपाई से पहले छिड़काव करें। फफूंद रोग नियंत्रण के लिए 600-800 ग्राम इंडोफिल एम-45 को 250 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ खेत में 10-15 दिनों के अंतर पर छिड़काव करें। सफेद मक्खी, हरा तेला एवं बीटल की रोकथाम के लिए 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। टमाटर तथा बैंगन में फलीछेदक कीट नियंत्रण हेतु कार्बोरिल 2 ग्राम प्रति लीटर घोल का छिड़काव करें।

उपयुक्त रहता है। पोषक तत्वयुक्त दोमट मृदा, खेती के लिए उपयुक्त रहती है। इसके लिए जल-निकास की व्यवस्था जरूर होनी चाहिए। इसकी अच्छी पैदावार के लिए मृदा का पी-एच मान 6-7.5 के मध्य होना चाहिए। उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन टमाटर की रोपाई मार्च में हो जानी चाहिए। यह मई के अन्त या जून के प्रथम सप्ताह में तैयार हो जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी रोपाई का सही समय अप्रैल से जून के मध्य होता है। टमाटर की फसल में पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे की दूरी 45-60×30-45 सें.मी. रखनी चाहिए। पौध रोपाई का कार्य शाम के समय में करना चाहिए।

- एक हैक्टर क्षेत्रफल के लिए नर्सरी तैयार करने हेतु संकर तथा अन्य किस्मों के लिए 200-250 एवं 350-400 ग्राम बीज पर्याप्त होते हैं। बीज उपचार

थीरम या कैप्टॉन 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से करें। पौधशाला में पौध उठी हुई क्यारियों में तैयार करें।



बैंगन

इन क्यारियों की लंबाई व चौड़ाई 3×0.6 मीटर रखनी चाहिए। बीजों की बुआई पंक्तियों में करें तथा बुआई की गहराई 1.5 से 2.0 सें.मी. रखें। बीजों को बोने के बाद मृदा व गोबर की खाद के मिश्रण से ढककर हजारों की सहायता से हल्की सिंचाई करनी चाहिए, जिससे कि क्यारियों में नमी बनी रहे तथा बीजों का एक समान जमाव होता है। 35 से 40 दिनों में पौध रोपाई योग्य हो जाती है।

- खाद व उर्वरकों का प्रयोग करने से पहले मृदा की जांच करवा लेनी चाहिए। मृदा की जांच के अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। बुआई पूर्व 20-25 टन/हैक्टर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। नाइट्रोजन 120 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 100 कि.ग्रा. तथा पोटेशियम 80 कि.ग्रा./हैक्टर करनी चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा व फॉस्फोरस एवं पोटेशियम की पूरी मात्रा खेत तैयारी के समय खेत में देनी चाहिए। नाइट्रोजन की शेष बची हुई मात्रा रोपाई के 45 दिनों बाद टॉप ड्रेसिंग के द्वारा खड़ी फसल में प्रयोग करनी चाहिए।
- ग्रीष्मकालीन बैंगन के लिए अच्छे जल-निकास वाली बलुई दोमट मृदा खेती के लिए उपयुक्त है। मृदा का पी-एच मान 6 से 7 के बीच उपयुक्त है। ग्रीष्मकालीन बैंगन के लिए नर्सरी में बीज की बुआई करें। बैंगन की उन्नत

प्याज



इसमें आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई करें तथा रोपाई के 45 दिनों बाद प्रति हैक्टर 72 कि.ग्रा. यूरिया की दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें। प्याज की फसल को पर्पल ब्लांच रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत मैकोजेब और यदि थ्रिप्स कीट लगे हों, तो 0.6 मि.ली. फॉस्फेमिडान या 1.5 मि.ली. नुआक्रॉन या 0.5 मि.ली. साइपरमेथ्रिन या 75 मि.ली. फेनवेलरेट 20 ई.सी. या 175 मि.ली. डेल्टामैथ्रिन 2.8 ई.सी. को 200-250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्रजातियां जैसे-पूसा हाइब्रिड-5, पूसा हाइब्रिड-9, विजय हाइब्रिड, पूसा पर्पल लौंग, पूसा क्लस्टर, पूसा क्रान्ति, पंजाब जामुनी गोला, नरेन्द्र बागन-1, आजाद क्रान्ति, पन्त ऋतुराज, पन्त सम्राट, टी-3 आदि प्रमुख हैं।

- बैंगन में खाद एवं उर्वरक की मात्रा प्रजातियों, स्थानीय जलवायु व मृदा के प्रकार पर निर्भर करती है। अच्छी फसल के लिए 15-20 टन सड़ी गोबर की खाद खेत को तैयार करते समय तथा तत्व के रूप में रोपाई से पहले 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 60 कि.ग्रा. पोटाश

व 150 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की आधी मात्रा अंतिम जुताई के समय मृदा में मिला दें। बाकी आधी नाइट्रोजन की मात्रा को फूल आने के समय प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें तथा क्यारियों में लम्बे फल वाली प्रजातियों के लिए 70-75 सें.मी. और गोल फल वाली प्रजातियों के लिए 90 सें.मी. की दूरी पर पौध रोपण करें। एक हैक्टर में फसल रोपण के लिए 250-300 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

- **तनाछेदक:** सूंडी, पौधों के प्ररोह को नुकसान करती है तथा बाद में मुख्य

तने में घुस जाती है। छोटे ग्रसित पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं। बड़े पौधे मरते नहीं, ये बौने रह जाते हैं तथा इनमें फल कम लगते हैं। प्ररोह व फलछेदक (शूट एंड फ्रूट बोरर): इस कीट की सूंडी पौधे के प्ररोह व फल को हानि पहुंचाती है। ग्रसित प्ररोह मुरझाकर सूख जाते हैं। फलों में सूंडियां टेढ़ी-मेढ़ी सुरंगें बनाती हैं। फल का ग्रसित भाग काला पड़ जाता है तथा खाने लायक नहीं रहता। ग्रसित पौधों में फल देरी से लगता है या लगते ही नहीं। तनाछेदक, प्ररोह व फलछेदक के नियंत्रण के लिए रैटून फसल न लें, क्योंकि इसमें फलछेदक का प्रकोप अधिक होता है। रोगी प्ररोहों व फलों को निकालकर मिट्टी में दबा दें। फलछेदक की निगरानी के लिए 5 फेरोमोन ट्रेप प्रति हैक्टर लगाएं। नीम बीज अर्क (5 प्रतिशत) या बी.टी. 1 ग्राम/लीटर या स्पिनोसेड 45 एस.सी. 1 मि.ली./4 लीटर या कार्बेरिल, 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम/लीटर या डेल्टामैथ्रिन 1 मि.ली./लीटर का फूल आने से पहले इस्तेमाल करें।

- इस महीने प्याज व लहसुन की तेजी से तैयार होती फसलों का ध्यान रखना चाहिए। नई तैयार हो रही फसल प्याज व लहसुन को नर्म खेत की जरूरत होती है, लिहाजा निराई-गुड़ाई करके खेत को नर्म बनाएं। अगर जरूरी लगे तो खेत में यूरिया खाद डालें।
- लहसुन एवं फ्रेंचबीन की फसल में निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें।
- सुनहरी हल्दी और खुशबूदार अदरक की बुआई के लिए मार्च का महीना



हल्दी



अदरक

उपयुक्त होता है। बुआई के लिए हल्दी व अदरक की स्वस्थ गांठों का इस्तेमाल करें। इन गांठों की बुआई 50×25 सें.मी. की दूरी पर करें। खेत की तैयारी करते समय 10 टन कम्पोस्ट, 1 बोरा यूरिया, 1 बोरा डीएपी तथा 1 बोरा पोटेशियम सल्फेट का प्रयोग करें। 2 महीने बाद 1 बोरा यूरिया, गुड़ाई के समय दें।

बागवानी फसलें

- नीबू में यदि फरवरी में उर्वरक नहीं दिया गया हो, तो उसे दे सकते हैं।
- अमरूद के नए पौधों की रोपाई की जा सकती है। अमरूद, आंवला, आम,



नीबू

कटहल, पपीता व लीची के नवरोपित पौधे की सिंचाई करें।

- पपीता, आम और अमरूद आदि के बगीचों की ठीक से सफाई करें। उनमें



अमरूद



पपीता



आंवला

आम

- इसमें भुनगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफॉस 1 मि.ली. अथवा डाईमैथोएट 1.6 मि.ली. प्रति लीटर पानी में तथा आम में चूर्णिल आसिता रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) सामान्यतः नई मंजरियों, पत्तियों एवं नये फलों पर आता है। इसकी रोकथाम के लिए 500 ग्राम/पौधा गंधक चूर्ण का प्रयोग करना चाहिए। डायानोकेप 1 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव मार्च में 15 दिनों के अंतराल पर करना चाहिए या कैराथेन 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आम में काला सड़न/आंतरिक सड़न के नियंत्रण के लिए बोरेक्स 6 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। उपरोक्त रोगों एवं कीटों के विरुद्ध उपयुक्त रसायनों को एक साथ मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं।
- आम के पौधों में मिलीबग या गुजिया प्रमुख कीट है। मादा कीट मार्च-अप्रैल में पौधों से नीचे उतरकर भूमि की दरारों में अंडे देती हैं। मादा कीट हजारों की संख्या में कोमल अंग जैसे-बौर, पत्तियां इत्यादि को चूसकर सूखा देती हैं। इनकी रोकथाम के लिए दिसंबर में आम के मुख्य तने के चारों तरफ ग्रीस (मृदा की सतह से 12 इंच ऊपर) लगाकर उस पर पॉलीथीन की पट्टी (50 सें.मी. चौड़ी) लगा देनी चाहिए। तने के आसपास क्लोरोपायरीफॉस 250 ग्राम प्रति वृक्ष की दर से मृदा में मिला देनी चाहिए। इस समय मृदा में मौजूद नमी को बनाए रखने के लिए पौधे के तने के चारों तरफ सूखे खरपतवार या काली पॉलीथीन की मल्लिचंग बिछाना लाभदायक पाया गया है।





केला

जरूरत के मुताबिक सिंचाई करें व खाद डालें। अमरूद में उकठा रोग नियंत्रण हेतु 30 ग्राम बाविस्टीन को 15 लीटर पानी में मिलाकर प्रति पौधा जड़ों में प्रयोग करें।



अंगूर

पुष्प व संगंधीय वाले पौधे

- गर्मी वाले मौसमी फूलों जैसे-पोर्चुलाका, जीनिया, कोचिया, नारंगी का समास, ग्रोम्फ्रीना, सेलोसिया, बालसम, फ्रेंच गेंदा, पेटूनिया, साल्विया, सूरजमुखी व वरवीना के बीजों को एक मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई की क्यारियां बनाकर बीज की बुआई कर दें। बीजाई के बाद नियमित रूप से नर्सरी की सिंचाई करते रहें तथा निराई-गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दें।



रजनीगंधा

- फूलदार पेड़ व झाड़ियां तथा हेज लगाना पूरा कर लें। मई-जून में लगने वाले घास के लॉन की भूमि की तैयारी भी मार्च से शुरू कर दें।

- रजनीगंधा के बल्बों की रोपाई विगत माह में तैयार की गयी क्यारियों में 20-30 सें.मी. की दूरी पर करें। फूलों की खेती में दिलचस्पी रखने वाले किसान इस महीने रजनीगंधा व गुलदाउदी की रोपाई करें। रोपाई करने के बाद बाग की हल्की सिंचाई करना न भूलें।



ग्लेडियोलस

- ग्लेडियोलस में कन्द लेने के लिए पौधे को भूमि से 15-20 सें.मी. ऊपर से काटकर छोड़ दें और सिंचाई करें। जब पत्तियां पीली पड़ने लगें, तो सिंचाई बन्द कर दें। ग्लेडियोलस में काला धब्बा रोग की रोकथाम के लिए 0.2 प्रतिशत कैप्टॉन का घोल बनाकर छिड़काव करें। ग्लेडियोलस में कटुआ कीट नियंत्रण के लिए खेत की तैयारी



गुलाब

के समय 20-25 कि.ग्रा./हैक्टर थीमेट 10 जी या कार्बोफ्यूरोन के ग्रैन्यूल्स मिला लें। यदि चेंपा एवं थ्रिप्स का प्रकोप है, तो उससे बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत मेटासिड-50 दवा का घोल बना लें और छिड़काव करें।

- गुलाब की फसल में आवश्यकतानुसार छंटाई, निराई-गुड़ाई व सिंचाई करना बहुत ही आवश्यक है। गुलाब के खेतों में गोबर की सड़ी हुई खाद 10 टन/हैक्टर के अलावा 100-200 ग्राम कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट प्रत्येक चार पौधों के समूह की दर से छंटाई के बाद दो बार में दी जाये।

- कट फ्लावर के लिए मुख्यतः जरबेरा, गुलदाउदी, गुलाब, ग्लेडियोलस और रजनीगंधा प्रचलित हैं। गर्मियों में उगने वाले पुष्पीय पौधों के लिए फरवरी-मार्च में बीजारोपण करें।

- गर्मी वाले मौसमी फूलों जैसे-पोर्चुलाका, जीनिया, सनफ्लावर, कोचिया, नारंगी कासमास, ग्रोम्फ्रीना, सेलोसिया व बालसम के बीजों को एक मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई की क्यारियां बनाकर बीज की बुआई कर दें।

- केले में 25 ग्राम नाइट्रोजन की मात्रा को पौधे से 40-50 सें.मी. दूर गोलाई में डालकर चारों तरफ निराई-गुड़ाई करके मृदा में मिला दें तथा सिंचाई करें।
- आंवले के लिए कंचन, कृष्णा, नरेन्द्र आंवला-6, नरेन्द्र आंवला-7, नरेन्द्र आंवला-10 किस्में अनुशंसित की जाती हैं। बीज को बोने से 12 घंटे पहले पानी में भिगो देना चाहिए, जो बीज पानी में तैरने लगें उन बीजों को फेंक देना चाहिए।
- अंगूर की मुख्य शाखा से अनावश्यक पत्तियों को तोड़ दें तथा लता को जाल पर व्यवस्थित कर दें। अंगूर के फलों का आकार व वजन बढ़ाने के लिए 50-60 प्रतिशत फूल खिलने की अवस्था पर 30-40 मि.ग्रा. जिब्रेलिक एसिड/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि अंगूर की फसल में रोगों व कीटों का हमला नजर आए, तो कृषि वैज्ञानिक की सलाह से जरूरी उपचार करें।

लीची

- फल लगने के एक सप्ताह बाद प्लैनोफिक्स (2 मि.ली./4.8 लीटर) या एन.ए.ए. (20 मि.ग्रा./लीटर) का एक छिड़काव करके फलों को झड़ने से बचाएं। फल लगने के 15 दिनों बाद बोरिक अम्ल (2 ग्राम/लीटर) या



बेर

- बोरेक्स (5 ग्राम/लीटर) के घोल का 15 दिनों के अंतराल पर तीन छिड़काव करने से फलों का झड़ना कम हो जाता है। मिठास में वृद्धि होती है तथा फल के आकार एवं रंग में सुधार होने के साथ-साथ फल फटने की समस्या भी कम हो जाती है।
- बेर में फल मक्खी की रोकथाम के लिए मैलाथ्रियाॉन (50 ई.सी.) 200 मि.ली. को 200 लीटर पानी में घोलकर तथा उसमें 2 कि.ग्रा. गुड़

मिलाकर एक सप्ताह के अंतराल पर छिड़काव करें।

- गर्मियों में पपीते की नर्सरी के लिए रोग तथा कीटमुक्त स्वस्थ मृदा का चयन करें। क्यारी की अच्छी तरह से जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा करें। 5 कि.ग्रा. बालू, 20 कि.ग्रा. गोबर की खाद एवं 1 कि.ग्रा. नीम की खली को मृदा में अच्छी तरह से मिलाकर क्यारियां बनायें तथा समतल कर लें। नर्सरी के लिये केवल स्वस्थ व परिपक्व बीज ही उपयोग करें। बीजों को आधा सें.मी. गहरा, एक इंच बीज से बीज की दूरी पर तथा तीन इंच पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर बोयें। क्यारी के चारों ओर मेड़ बनायें तथा फव्वारे से क्यारी की सिंचाई करें। पौधों को तेज धूप से बचाने के लिए क्यारी के ऊपर एक 3-4 फीट ऊंचा छप्पर बनायें। प्रत्येक 2-3 दिनों के अन्तराल पर फव्वारे द्वारा क्यारी की सिंचाई करते रहें। इस प्रकार बोये गये बीज 15-20 दिनों में उग आते हैं।
- बागों में अधिकतर पेड़ लगाने, काट-छांट व खाद-पानी देने का कार्य पूरा हो चुका है यदि नहीं तो शीघ्र कर लीजिए। मार्च में बागों में पानी जरूर दें।
- बरसात के मौसम में नवरोपित फलों के पौधों की निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें।



लीची